- नई कविता -

हिन्दी प्रतिष्ठा, प्रथम वर्ष

डॉ० अनिरुद्ध सिंह
मारवाड़ी कॉलेज

छायावादोत्तर हिन्दी कविता में विकसित होने वाली काव्यधाराओं में प्रगतिवाद और प्रयोगवाद के बाद नयी कविता का उदय हुआ। प्रामाणिक जीवन की अनुपस्थिति के कारण प्रगतिवाद एक नारे में तब्दील हो गया था तथा प्रयोगवाद के अनेक कवियों ने प्रयोग को ही कविता का साध्य मान लिया। इसलिए 1950 के बाद एक समय प्रयोगवादी कहे जाने वाले कवियों ने ही प्रयोगवाद को नयी कविता की उदार और सहज अन्तर्धारा में विलयित कर दिया। वस्तुतः नयी कविता दूसरे तार सप्तक के बाद विकसित होने वाली एक ऊर्जावान काव्यधारा है, जिसने स्वातंत्र्योत्तर भारतीय जीवन और व्यक्ति की संश्लिष्ट जीवन-परिस्थितियों का रचनात्मक साक्षात्कार किया।

1- 'यथार्थ के प्रति उन्मुक्त दृष्टि' - नयी कविता की आधारभूत विशेषता है। इसी कारण नयी कविता यथार्थ को उसकी सम्पूर्णता में ग्रहण करती है -

'जिन्दगी में जो कुछ है, जो भी है
सहर्ष स्वीकारा है।'
(मुक्तिबोध)

नयी कविता यह मानती है कि यथार्थ का कोई निर्दिष्ट ढांचा नहीं है। अतः उसे किसी विशिष्ट वैचारिक अनुशासन

से विश्लेषित नहीं किया जा सकता है। वस्तुतः वस्तु सत्य और अनुभव - सत्य की अन्तर्क्रिया से उपलब्ध होने वाला सत्य ही यथार्थ है।

2- अहं के प्रति सजगता और व्यक्तित्व की खोज - नयी कविता की चेतना का महत्त्वपूर्ण वैशिष्ट्य है। इस अहं बोध का कारण छायावादी वैयक्तिकता की तरह भावात्मक नहीं है बल्कि अस्मिता का संकट है। अज्ञेय के 'नदी के द्वीप' और 'यह दीप अकेला' इस दृष्टि से उद्धरणीय है -

'यह दीप अकेला, स्नेह भरा
है गर्व भरा मदमाता पर
इसको भी पंक्ति को दे दो।'

3- लघुमानव की अवधारणा - का सूत्रपात करती है और इस लघुता को लेकर उसके भीतर हीनता की कोई ग्रंथि नहीं है। लघुमानव देवत्व से परहेज करता है तथा ईश्वर और सामूहिकता के भीतर अपनी संभावनाओं की तलाश नहीं करता। नयी कविता इस मनुष्य को अधिक संभावना गर्भित रूप में देखती है -

'मैं रथ का टूटा पहिया
लेकिन मुझे फेंको मत
क्योंकि इतिहासों की सामूहिक गति
सहसा झूठी पड़ जाने पर
क्या जाने
सच्चाई टूटे पहियों का आश्रय ले। ("धर्मवीर भारती")

Scanned with CamScanner

4- **आधुनिक भावबोध** - नयी कविता आधुनिक भावबोध की कविता है और उसके इस आधुनिक भाव बोध पर पश्चिम के अस्तित्ववादी दर्शन का प्रभाव लक्षित होता है। आधुनिक भाव बोध का पहला महत्वपूर्ण बिन्दु 'वेदना' है। स्वतंत्रता और दायित्वबोध के अकेलेपन की टकराहट से उत्पन्न वेदना को नयी कविता मनुष्य की नियति के रूप में चित्रित करती है। यह वेदना नकारात्मक नहीं है बल्कि यह वैयक्तिक-चेतना का परिष्कार करती है -

'दुःख सबको मांजता है
और चाहे स्वयं
सबको यह मुक्त करना न जाने
किन्तु जिन्हें यह मांजता है
उन्हें यह सीख देता है
कि दूसरों को मुक्त रखे।'

आधुनिक भावबोध का दूसरा महत्त्वपूर्ण बिंदु है - 'संशय'। संशय परम्परा के समूचे अनुभव और व्यक्ति-अनुभव की टकराहट से उत्पन्न भावबोध है। नयी कविता यह मानती है कि संशयी चेतना व्यक्तित्व की स्वायत्तता और सार्थकता के लिये अनिवार्य है। वह संशय को मूल्य के रूप में, स्वीकार करते हुये उसे सत्य तक पहुँचाने का माध्यम मानती है -

संशय निकष है
सत्य का भी (नरेश मेहता)

निरर्थकता - बोध - आधुनिक भावबोध की एक स्थिति है। यांत्रिक जीवन, अराजकतावादी राजनीति और पूँजीवादी संस्कृति के कारण उत्पन्न निरर्थकता बोध नयी कविता में बहुत गहरा है। मुक्तिबोध की पंक्तियाँ है -

'मैं दुनिया के किसी अंधेरे में
हूँ भूतपूर्व यंत्र का निरर्थक
एक अनावश्यक जंग-खाया
टूटा पुर्जा ।'

यह निरर्थकता जिस मानसिकता को जन्म देती है, वह अप्रमाणिकता की चेतना में अभिव्यक्त होती है.

"तुमने जहाँ लिखा है प्यार
वहाँ लिख दो सड़क
फर्क नहीं पड़ता ।
मेरे युग का मुहावरा है
फर्क नहीं पड़ता ।" (केदारनाथ सिंह)

इस अप्रमाणिकता का मूल कारण नयी कविता यह भी मानती है कि एक ही व्यक्ति में कई ~~व्यक्तियों~~ व्यक्तित्वों का आरोपण हो गया है.

दो सत्य
दो संकल्प
दो-दो आस्थाएं
व्यक्ति में ही अप्रमाणिक व्यक्ति पैदा
हो रहा है. (नरेश मेहता)

Scanned with CamScanner

आधुनिक भाव बोध मूल्यों के संकट की बात बार-बार कहता है। आधुनिक जीवन संरचना में परम्परागत मूल्य निरर्थक हो गए हैं और नये मूल्यों की सृष्टि हो नहीं पायी है। अतः मनुष्य मूल्यहीनता और अनास्था के अंधकार में जीने के लिए अभिशप्त है। धर्मवीर भारती के 'अंधायुग' के अनेक प्रसंगों में मूल्यों के संकट की बात की गई है। उदाहरण के लिए गांधारी का यह कथन द्रष्टव्य है-

'जिसको तुम कहते हो प्रभु
उसने जब चाहा
मर्यादा को अपने ही हित में बदल लिया
वंचक है वो।'

5- महानगर और नगर नयी कविता की चेतना के भूगोल हैं। नगर बोध की नियतियां है- विडम्बना और विसंगति। इसकी अभिव्यक्ति नयी कविता में हुई है। सर्वेश्वर की पंक्तियां हैं-

लेकिन मैं देखता हूँ
आज के जमाने में
आदमी से ज्यादा लोग पोस्टरों को पहचानते हैं
वे आदमी से भी बड़े सत्य हैं

किसी भी संवेदनशील व्यक्ति के लिए नगर में अकेलापन उसकी त्रासद नियति है-

'बाजार भी जैसे
सन्नाटा है
बहरे के लिये
मेंहदी जैसे निरर्थक है।' (भवानीप्रसाद मिश्र)

Scanned with CamScanner

6- स्वातंत्र्योत्तर भारतीय राजनीतिक जीवन से संबद्ध-

इसकी राजनीतिक चेतना का आधार सांगठनिक नहीं है। नयी कविता की राजनीतिक चेतना रचनाकार के स्वतंत्र विवेक और मानवीय प्रतिबद्धता से प्रेरित है। चरित्रहीन राजनीति पर प्रहार करते हुये रघुवीर सहाय लिखते हैं-

'एक बार
जान-बूझ कर चीखना होगा
जिंदा रहने के लिये
दर्शक-दीर्घा में से
रंगीन फिल्म की घटिया कहानी की
सस्ती शायरी के शेर
संसद-सदस्यों से सुन
चुकने के बाद।'

7. परिवेश का बोध भाषा की क्षमता पर निर्भर करता है

नयी कविता सामान्यतः बोलचाल की भाषा में ग्रहण पर बल देती है। अतः नयी कविता के शब्द चयन का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। उसमें अंग्रेजी. उर्दू और लोकभाषा के शब्दों का निःसंकोच प्रयोग है.

'पिस गया वह भीतरी
और बाहरी दो कठिन पाटों के बीच
ऐसी ट्रैजडी है नीच।' (मुक्तिबोध)

नयी कविता में छंद की समूची अवधारणा का निषेध करते हुए 'स्वाधीन लय' पर जोर दिया गया

और इस स्वाधीन लय का संबंध 'अर्थ-लय' की अवधारणा स्थापित हुई। इस दृष्टि से अज्ञेय की निम्नांकित पंक्तियां उल्लेखनीय हैं -

'तुम क्या जानो
कितनी लम्बी होती है रात
अकेली
सिसकी की।'

नयी कविता काव्य-शैली के स्तर पर लम्बी कविता के विन्यास को स्वीकार करती है। छायावाद की लम्बी कविता का आधार कोई न कोई पौराणिक या ऐतिहासिक घटना है। जबकि नयी कविता इतिहास और पुराण को अपदस्थ करते हुए अपने लिये स्वयं एक नए कथानक का विन्यास करती है। इस दृष्टि से मुक्तिबोध की कविता 'अंधेरे में', धूमिल की 'पटकथा', राजकमल चौधरी का 'मुक्ति प्रसंग' तथा अज्ञेय की कविता 'असाध्य वीणा' प्रमुख हैं।

Scanned with CamScanner